ICSSR Sponsored

ISSN: 2319-9997

Journal of Nehru Gram Bharati University, 2024; Vol. 13 (2):139-148

दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अधिगम शैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

राघवेन्द्र मालवीय एवं मिथिलेश कुमार

शिक्षक–शिक्षा विभाग

नेहरू ग्राम भारती मानित् विश्वविद्यालयए कोटवा–जमुनीपुर–दुबावल, प्रयागराज (उ0प्र0)

Received: 14.10.2024 *Revised: 30.11.2024* *Accepted: 16.12.2024*

सारांशः

आज प्रत्येक छात्र चाहता है कि वह अपने विषय के सबसे अच्छे शिक्षक से शिक्षा प्राप्त करें परंतु हमारे समाज में अच्छे शिक्षकों की कमी है जिस कारण प्रत्येक बच्चा अच्छी शिक्षा पाने से वंचित रह जाते हैं, साथ ही एक अच्छा शिक्षक चाहता है कि वह अपने ज्ञान के माध्यम से अधिक से अधिक छात्रों को उनके जीवन लक्ष्य तक पहुंचाने में सफल हो सके। शिक्षक और छात्रों की अपनी–अपनी इन उद्देश्य की पूर्ति के लिए आज प्रत्येक शिक्षक व छात् तकनीकी माध्यमों का सहारा ले रहा है। सूचना तकनीकी ने सूचनाओं के आदान–प्रदान में एक नई क्रांति ला दी है जिसके द्वारा कोई भी व्यक्ति एक स्थान से बैठे–बैठे पूरी दुनिया में घटने वाली विभिन्न घटनाओं से संबंधित सूचनाओं को प्राप्त कर सकता है। सूचना तकनीकी के इस उपलब्धता ने सबसे ज्यादा प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र में डाला है क्योंकि आज प्रत्येक शिक्षक अपने ज्ञान को विभिन्न प्रकार के सोशल मीडिया नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से प्रत्येक बच्चों तक उपलब्ध कराने का प्रयास कर रहे हैं।

मुख्य शब्द – दीक्षा पोर्टल प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अधिगम शैली मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक निष्पत्ति इत्यादि

प्रस्तावना

प्रस्तावना–सरकार ने भी सूचना तकनीकी के बढ़ते प्रभाव को ध्यान में रखते हुए इसके माध्यम से शिक्षा के विकास को गति देने का प्रयास किया। सरकार ने इस बात पर विशेष ध्यान दिया की हमारे राष्ट्र की एक बड़ी जनसंख्या जो समाज की मुख्य धारा से कटा हुआ है जिस कारण वहां तक शिक्षा का वास्तविक स्वरूप पहुंचना संभव नहीं हो पा रहा है ऐसे में उन लोगों को शिक्षा की मुख्य धारा से

जोड़ने के लिए सोशल नेटवर्किंग साइट्स ही आज के समय के हिसाब से सबसे प्रासंगिक माध्यम है। इन्हीं उद्देश्यों को लेकर भारत सरकार ने राष्ट्रीय स्तर पर एक ऐसे मंच को तैयार करना चाहा जिसके माध्यम से राष्ट्र की प्रत्येक छात्र को अच्छी शिक्षा प्राप्त हो सके, अभिभावक भी अपने बच्चों के शिक्षा के प्रति जागरूक बन सके एवं इस मंच को बनाने का मुख्य उद्देश्य उन शिक्षकों के लिए हैं, जो नए–नए शिक्षण तकनीकी एवं मनोवैज्ञानिक तकनीकी से आज भी अनभिज्ञ है उन्हें भी इस मंच के द्वारा समय–समय पर प्रशिक्षण प्रदान करने का लक्ष्य रखा गया। भारत सरकार ने अपने इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए, वृहद स्तर पर कार्यक्रम को संचालित करने के लिए देश के सर्वश्रेष्ठ शिक्षाशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों एवं तकनीकी विशेषज्ञों से विचार विमर्श करने के पश्चात दीक्षा पोर्टल की शुरुआत किया।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्त्व

दीक्षा पोर्टल के माध्यम से न केवल शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों को प्रशिक्षण देने का कार्य किया जाता है बल्कि वित्त पोषित एवं अशासकीय विद्यालयों में शिक्षण कार्य करने वाले शिक्षकों के लिए भी प्रशिक्षण कार्यक्रम उपलब्ध कराता है। इसलिए इस प्रशिक्षण को प्राप्त करने वाले प्रत्येक शिक्षकों से यह उम्मीद की जा सकती है अपने शिक्षण में उच्च स्तर की क्षमता का विकास करने में सफल होंगे और अपने छात्रों को उच्च स्तरीय ज्ञान प्रदान करने का कार्य करेंगे। परंतु शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए दीक्षा पोर्टल अर्थात ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षकों के प्रशिक्षण में उस प्रकार की और विकास की कल्पना करना निराधार होगा जो वास्तविक रुप से अर्थात ऑफलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों को प्रदान किया जाता है क्योंकि ऑफलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षक और शिक्षक आमने–सामने उपस्थित होकर वास्तविक परिस्थितियों में शिक्षण कौशल एवं क्षमताओं का ज्ञान प्राप्त करना और दूसरी तरफ अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षक और प्रशिक्षक का आमने सामने उपस्थित होना जहां शिक्षक के मन में आने वाली समस्याओं का समाधान करने का कोई वास्तविक विकल्प ना हो तो ऐसे में शिक्षक के द्वारा पूर्ण रूप से पूरा करना संभव नहीं है।

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन

मोहंती, नमिता (2007) ने शिक्षकों की जनांकिकीय विशेषताओं गुण और विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक आयाम एक साथ सहसंबंध विश्लेषण का अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों की जनांकिकीय विशेषताओं (शैक्षणिक योग्यता, आयु, अनुभव व आय) और उनके गुणो (अपेक्षाओं दक्षता व शिक्षण व्यूह रचना) के मध्य संबंध की जांच करना था। इसके अतिरिक्त यह भी जांच करना था कि वे विद्यार्थियों की शैक्षणिक निष्पत्ति और मनोवैज्ञानिक भिन्नता से कैसे संबंधित थे। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 120 शिक्षक और 600 प्राथमिक विद्यालयी विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।

अध्ययन के परिणामों में पाया गया कि शिक्षकों की आए उनकी अपेक्षाओं, दक्षता और शिक्षण व्यूह रचना के अधिग्रहण से सार्थक सहसंबंध है। दूसरी तरफ

शिक्षकों की अपेक्षाओं, दक्षताओं और अर्थ अभिग्रहण का विद्यार्थियों को शैक्षणिक निष्पत्ति के साथ सार्थक सहसंबंध पाया गया। अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में यह भी पाया गया कि शिक्षकों की दक्षता, अभिमुखीकरण, व्यूहरचना के उपयोग और विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक विभिन्नता के मध्य सार्थक संबंध था।

- कौर, बीन्दजीत और शर्मा सुषमा (2014) ने सामान्य एवं संवेगात्मक बुद्धिमता के संबंध में शिक्षण दक्षता का अध्ययन किया और निष्कर्ष में बताया कि सामान्य बुद्धिमता के शिष्य अध्यापकों की शिक्षक दक्षता के साथ उच्च धनात्मक संबंध पाया गया तथा उच्च समान्य बुद्धि लब्धि के शिष्य अध्यापकों की शिक्षण दक्षता भी उच्च पायी गयी। उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि लब्धि वाले शिष्य अध्यापकों की शिक्षक दक्षता सामान्य पायी गयी।

- राठौड़, अनामिका (2014) ने "माध्यमिक स्तर के शिक्षकों प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन" शीर्षक पर शोध कार्य किया और निष्कर्ष में बताया कि शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में उच्च है। विज्ञान संकाय के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता कला संकाय के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में उच्च है। महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में उच्च है। शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी का प्रभाव पड़ता है।

- अहमद, जराड और खान, अहमद (2016) ने माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण दक्षता का उनकी शैक्षिक योग्यता, संकाय एवं विद्यालय के स्वरूप के संबंध में अध्ययन किया और निष्कर्ष में बताया कि सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के शिक्षण दक्षता निजी विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण दक्षता से अधिक अच्छी पाई गई। परंतु शैक्षिक योग्यता के संदर्भ में अध्यापकों की शिक्षक दक्षता में कोई अंतर नहीं पाया गया। विज्ञान विषय के अध्यापकों की शिक्षण दक्षता कला संकाय के अध्यापकों की तुलना में अधिक दक्षता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है

- दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के शहरी विद्यार्थियों एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

- दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के शहरी छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

- दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के अधिगम शैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाए –

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध को अधोलोखित परिकल्पनाओ के अंतर्गत सम्पादित किया

गया है

- दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के शहरी विद्यार्थियों एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं
- दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के शहरी छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं
- दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं

'ोध विधि – प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है

- जनसंख्या–जनसँख्या का तात्पर्य सम्पूर्ण इकाइयों के निरिक्षण से होता हैद्य इसमें कुछ इकाइयों का चयन न्यादर्श बनाया जाता है इसके अंतर्गत शोधकर्ता ने शहरी क्षेत्र के 50 प्राथमिक विद्यालयों में से प्रत्येक विद्यालय से 2 शिक्षक व 2 शिक्षिका अर्थात 100–100 शिक्षक तथा शिक्षिका एवं 100 विद्यार्थी इसी तरह 50 ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में से प्रत्येक विद्यालय से 2 शिक्षक व 2 शिक्षिका अर्थात 100–100 शिक्षक तथा शिक्षिका एवं 100 विद्यार्थी को न्यादर्श के रूप में चुना गया है द्य इस प्रकार कुल 400 शिक्षक शिक्षिकाएं (200 शिक्षक व 200 शिक्षिका) व 200 विद्यार्थियों को न्यादर्श हेतु चुना गया है |

प्रसअधिगम शैली सूची–

प्रस्तुत अध्ययन में अधिगम शैली के ऑकड़ों का संकलन डॉ० सुभाष चन्द्र अग्रवाल द्वारा निर्मित अधिगम शैली सूची द्वारा किया गया । इस सूची में नौ–नौ प्रश्न प्रत्येक अधिगम शैली से सम्बन्धित होते हैं तथा कुल अधिगम शैली संख्या में 7 है। इस प्रकार कुल 63 प्रश्न सूची में है जिसे निम्नलिखित प्रकार से प्रदर्शित किया गया है–

क्रम संख्या	अधिगम शैली	प्रश्न संख्या
1.	नम्य / अनम्यशील अधिगम शैली	1,8,15,22,29,36,43,50,57
2.	वैयक्तिक अवैयक्तिक अधिगमशैली /	2,9,16,23,30,37,44,51,53
3.	दृश्य / श्रव्य अधिगम शैली	3,10,17,24,31,38,45,52,59
4.	क्षेत्रपरतंत्र / क्षेत्र स्वतंत्र अधिगमशैली	4,11,18,25,32,39,46,53,60
5.	लघुध्यान विस्तार / दीर्घध्यान विस्तार अधिगम शैली	5,12,19,26,33,40,47,54,61
6.	अभिप्रेरणा केन्द्रित / अभिप्रेरणा अकेन्द्रित अधिगम शैली	6, 13, 20, 27, 34,41,48,55,62
7.	वातावरण युक्त / वातावरण रहित अधिगम शैली	7,14,21,28,35,42,49,56,63

डॉ० अग्रवाल द्वारा निर्मित अधिगम शैली सूची को प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिये देने से पूर्व उसमें कुछ निर्देश दिये गये है जिसके आधार पर छात्र इसे स्वयं पूरा कर सकते है इसे पूरा करने के लिये समय का कोई प्रतिबन्ध नहीं है। इस सूची से सम्बन्धित सभी कथनों की प्रतिक्रिया केवल हाँ या नहीं पर (बवततमबज) चिन्ह लगा कर देना होता है। आवश्यकतानुसार समस्या से सम्बन्धित तथ्यों की जानकारी छात्रों द्वारा पूछने पर बीच–बीच में प्रदान की जाती है।

अंकीकरण–

प्रदत्तों के अंकीकरण के लिये परीक्षण से प्राप्त प्रतिक्रिया के आधार पर अंक प्रदान किये जाते हैं। इसके लिये अंकन कुँजी उपलब्ध है। अंकन कुँजी के द्वारा प्रत्येक छात्र की प्रतिक्रिया को मिलाया जाता है तथा मेल खाते प्रतिक्रिया को एक अंक और बेमेल प्रतिक्रिया को 0 अंक प्रदान किये जाते हैं। इस प्रकार सभी छात्रों को प्रत्येक अधिगम शैली पर अलग–अलग अंक प्रदान किये जाते हैं।

विश्वसनीयता–

प्रस्तुत सूची को विश्वसनीयता परीक्षण पुर्नपरीक्षण द्वारा ज्ञात की गयी है। प्रत्येक अधिगम शैली के लिये प्राप्त विश्वसनीयता गुणक निम्नवत् है–

तालिका–2

क्रम संख्या	अधिगम शैली	विश्वसनीयता गुणांक
1.	नम्य / अनम्यशील अधिगम शैली	0.884
2.	वैयक्तिक / अवैयक्तिक अधिगम शैली	0.912
3.	दृश्य / श्रव्य अधिगम शैली	0.856
4.	क्षेत्र परतंत्र / क्षेत्र स्वतंत्र अधिगम शैली	0.849
5.	लघुध्यान विस्तार / दीर्घध्यान विस्तार अधिगम शैली	0.909
6.	अभिप्रेरणा केन्द्रित /अभिप्रेरणा अकेन्द्रित अधिगम शैली	0.841
7.	वातावरण युक्त / वातावरण रहित अधिगम शैली	0.899

अतः प्रस्तुत परीक्षण की विश्वसनीयता गुणांक 0.841 से 0.912 तक प्राप्त की गयी है जो उच्च स्तर की है अतः परीक्षण को पूर्ण रूप से विश्वसनीय कहा जा सकता है।

वैधता–

निर्माणकर्ता के पास कोई ऐसा परीक्षण उपलब्ध नहीं था जिसके आधार पर वैधता का निर्धारण किया जा सकता। अतः वस्तुनिष्ठ वैधता ज्ञात की गयी। इसके लिये निर्माणकर्ता ने अधिगम शैली सूची को इस क्षेत्र के 5 विशेषज्ञों को दिया तथा इसे पंच बिंदु मापनी पर निर्धारण के लिये आग्रह किया इसके द्वारा प्रस्तुत परिणाम से यह ज्ञात हुआ कि इन सभी में प्रत्येक अधिगम शैली के लिये प्रत्येक विशेषज्ञ के द्वारा किये गये निर्धारण एक समान है। अतः प्रश्नावली को पूर्णरूपेण वैध कहा जा सकता है।

1–दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के शहरी विद्यार्थियों एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली में कोई सार्थक

अन्तर नहीं हैं

तालिका 1 दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के शहरी विद्यार्थियों एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली का विवरण

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतन्त्रता मान	'टी' मान	टिप्पणी	
						.01 स्तर	.05 स्तर
शहरी	100	50.76	5.76	198	7.02	सार्थक अंतर है।	सार्थक अंतर है।
ग्रामीण	100	45.06	5.72				

तालिका संख्या 1 में दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के शहरी विद्यार्थियों एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली का विवरण प्रस्तुत किया गया है द्य तालिका के अनुसार प्रथम समूह दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों का है जिसका मध्यमान 50.76 तथा मानक विचलन 5.76 है, जबकि दूसरा समूह दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों का है जिसका मध्यमान 45.06 तथा मानक विचलन 5.72 है। इन समूहों के चरों के मध्यमानों की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसके आधार पर क्रांतिक अनुपात (ब्–त्) की गणना की गई जिसका मान 7.02 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के शहरी विद्यार्थियों एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है द्य इस प्रकार शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना संख्या 8 अस्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को स्वीकार किया जाता है।

2–दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के शहरी छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं ।

तालिका 2 दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के शहरी छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली का विवरण

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतन्त्रता मान	'टी' मान	टिप्पणी	
						.01 स्तर	.05 स्तर
छात्र	50	49.50	5.99	98	1.90	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।
छात्राओं	50	52.02	5.23				

तालिका संख्या 2 में दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के शहरी छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली का विवरण प्रस्तुत किया गया है द्य तालिका के अनुसार प्रथम समूह दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालयों के शहरी छात्रों का है जिसका मध्यमान 49.50 तथा मानक विचलन 5.99 है, जबकि दूसरा समूह दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालयों के शहरी छात्राओं का है जिसका मध्यमान 52.02 तथा मानक विचलन 5. 23 है। इन समूहों के चरों के मध्यमानों की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसके आधार पर क्रांतिक अनुपात (ब्–त्) की गणना की गई जिसका मान 1.90 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0. 01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से कम है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के शहरी छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं द्य इस प्रकार शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना संख्या 9 स्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को स्वीकार किया जाता है।

3–दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं

तालिका 3 दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के अधिगम शैली का विवरण

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतन्त्रता मान	'टी' मान	टिप्पणी	
						.01 स्तर	.05 स्तर
छात्र	50	44.30	5.27	98	1.34	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।
छात्राओं	50	45.82	6.04				

तालिका संख्या 3 में दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली का विवरण प्रस्तुत किया गया है द्य तालिका के अनुसार प्रथम समूह दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण छात्रों का है जिसका मध्यमान 44.30 तथा मानक विचलन 5.27 है, जबकि दूसरा समूह दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण छात्राओं का है जिसका मध्यमान 45.82 तथा मानक विचलन 6. 04 है। इन समूहों के चरों के मध्यमानों की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसके आधार पर क्रांतिक अनुपात (ब्–त) की गणना की गई जिसका मान 1.34 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0. 01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से कम है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्राथमिक विद्यालय के ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं द्य इस प्रकार शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना संख्या 3 स्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को स्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष–

1–तालिका 1 के निष्कर्ष के अनुसार अध्ययन में यह पाया गया कि शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के बीच दीक्षा पोर्टल का उपयोग करने और सीखने की शैली में अंतर उनके सामाजिक और भौतिक परिवेश के कारण होता है। हालांकि दीक्षा पोर्टल के प्रशिक्षण कार्यक्रम दोनों प्रकार के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होते हैं, परंतु इनकी प्रभावशीलता को बेहतर बनाने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी सुविधाओं को बढ़ावा देना, शिक्षकों का विशेष प्रशिक्षण और सीखने के संसाधनों की उपलब्धता पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

2– तालिका 2 के निष्कर्ष के अनुसार अध्ययन में यह पाया गया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में छात्र और छात्राएं समान रूप से विभिन्न अधिगम शैलियों को अपनाते हैं, और इसमें लिंग आधारित कोई स्पष्ट भिन्नता नहीं पाई गई। दीक्षा पोर्टल के प्रशिक्षण कार्यक्रम के डिजाइन और सामग्री को इस प्रकार तैयार किया गया है कि यह सभी प्रकार के अधिगम शैलियों को समान रूप से संबोधित करता है, जिससे दोनों समूहों को समान अवसर और सुविधा प्राप्त होती है। इसके अलावा, आधुनिक डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षा के माध्यमों के उपयोग ने भी छात्रों की अधिगम शैली में बदलाव लाने का कार्य किया है। छात्रों और छात्राओं, दोनों ने एक समान रूप से इन संसाधनों का उपयोग करते हुए अपने अधिगम में सुधार किया, और लिंग आधारित किसी प्रकार की अधिगम क्षमता में कमी या अधिकता का अनुभव नहीं किया गया।

3– तालिका 3 के निष्कर्ष के अनुसार, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित शहरी प्राथमिक विद्यालयों के छात्र और छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित ग्रामीण छात्र और छात्राओं की अधिगम शैली में सार्थक अंतर नहीं होने का तात्पर्य है कि कार्यक्रम ने एक समान अधिगम वातावरण को स्थापित किया है। इससे यह सिद्ध होता है कि तकनीकी साधनों के उपयोग से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार संभव है, विशेष रूप से

ग्रामीण क्षेत्रों में।

इस प्रकार, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि दीक्षा पोर्टल के माध्यम से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम ने ग्रामीण छात्रों की अधिगम शैली में विविधता लाने में उतनी प्रभावी भूमिका नहीं निभाई, जितनी अपेक्षित थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. टग्रवाल, एम0 (2007). सम कोरिलेट्स ऑफ एकेडमिक एचीवमेन्ट मोटीवेशन पी–एच०डी० लखनऊ विश्वविद्यालय पृष्ठ–59.
2. आलपोर्ट, जी० डब्ल्यू० एवं कन्टोल, पी0ई0 (1963). मैनुअल फार स्टडी ऑफ टीचिंग एट्टीटयूट हार्पर एण्ड रो पब्लिकेशन, न्यूयार्क पृष्ठ–259.
3. आरिफ, एम०आई० रसिद, ए० ताहिरा एस०एस० एवं अख्तर एम0 (2012). व्यक्तित्व और शिक्षण भावी शिक्षक व्यक्तित्व में एक जांच International Journal of Humanities and social Science- Vol&2 No&17] Pp&16&17-
4 इंगलहर्र, मैक्स डी0 (1972) मैथड ऑफ एजूकेशन रिसर्च, रैण्ड मैकवाली एण्ड कम्पनी, शिकागो
5. एण्डरसन, लोरी एफ० तथा हेन्डरिक्सन एम0जे0 (2007). टीचर नॉलेज रेटिंग ऑफ कम्पीटेन्सी इम्पोरटेन्स एण्ड आब्जर्वड मैनेजमेंट कम्पीटेन्सीज जर्नल आर्टिकल, रिपोर्ट रिसर्च, ई०आर०टी०सी० बेब पोर्टल, पृष्ठ–142.
6. कपिल, एच० के० (2006). अनुसंधान विधियाँ, आगरा एच०पी० भार्गव बुक हाउस, पृ०–19.
7. कलिंग्र्जर, एफ० एन० (1967). फाउण्डेशन आफ विहेवियरल रिसर्च, हालंट रेन हार्ट एण्ड विन्सटर इन न्यूयार्क पृष्ठ 13
8. कुमार महेश मुध्मल एवं चन्द सतीश (2015) बागपत जनपद के प्राथमिक स्तर पर कार्यरत बी०एड० एवं बी०पी०एड० प्रशिक्षित अध्यापकों की क्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन Asian Journal of Multidisciplinary Studies Volume 3- Issue
9. कौर गुरपीत एण्ड मेहता सी०के० (2007) कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ द लेवल ऑफ अचीवमेन्ट मोटीवेशन सेल्फ कान्फीडेन्स एण्ड एसर्टिवनेस एमंग एडोलसेन्ट गर्ल्स पी–एच०डी० लखनऊ विश्वविद्यालय पृष्ठ 49
10. कौर हरप्रीत (2013) एटीट्यूड दुवडर्स टीचिंग प्रोफेशन इन रिलेशन टु एडजस्टमेन्ट ऑफ सैकेण्डरी स्कूल टीचर्स एजुटैक्स वोल्यूम 11 नं0–6 पृ०–22–24
11. गाग्ट सी०एल० (2001) लोकस ऑफ कन्ट्रोल अचीवमेंट मोटीवेशन एण्ड एटीट्यूड टुवर्डस माडेंरनिटी एमंग कालेज एण्ड यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स पी–एच०डी० उत्कल विश्वविद्यालय पृष्ठ 49
12. गिल एल० जे० तथा वी० स्थिलंका (2012) अमेरिकन मैक्सिकन सेकेन्डरी स्कूल के छात्रों में भौक्षिक उपलब्धि के गैर बौद्धिक सह सम्बन्धों का अध्ययन पी–एच०डी० केरल विश्वविद्यालय केरल पृष्ठ–123.
13. गुनले एव कैनन (2009), तुर्की भावी शिक्षको की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का मूल्यांकन जर्नल ऑफ एजुकेशन एड प्रैक्टिस वॉल्यूम 4. सख्या 10 ू–नेजम–वतह
14. गुप्ता तारकेश्वर (2014) बी०एड० विद्यार्थियों का प्रशिक्षण के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन भारतीय आधुनिक शिक्षा वर्ष 34 अंक 3. नई दिल्ली एन.सी.ई.आर.टी. ९.

45–54
15– गोयल सुनिता (2013) अपने पे के प्रति छात्राक्षक का रवैया International journal of social science interdisciplinary research volume&2 No 1
16. जमानियन एवं बहरीनी (2017) ईरानी ईएफएल शिक्षकों का उनके शिक्षण व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन International Journal of Education and Psychological Research ¼IJEPR½ Volume 3- Issue 2
17 जहाँ हसरत (2017) उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन The International Journal of Indian Psychology Volume 5- Issue 1 DIP 18 01 080/2017050DOI 10 25215/0501 080 http-//www-ijip in

Disclaimer/Publisher's Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.